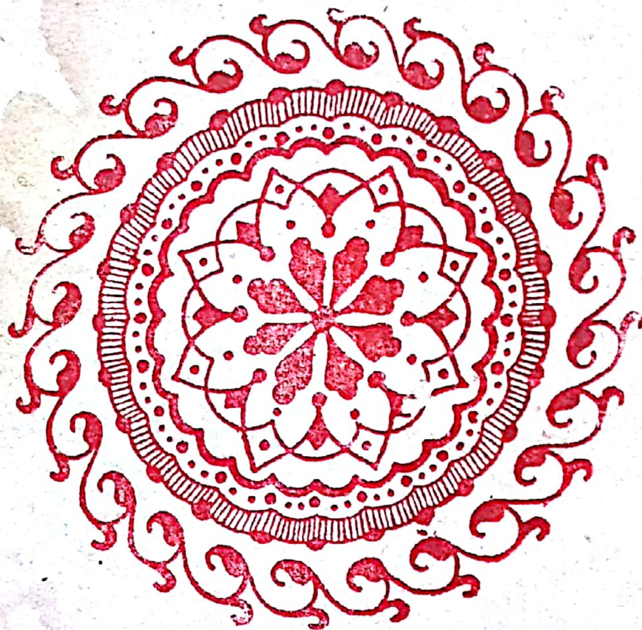
नेपालक शिलोत्कीर्ण मैथिली गीत



डाक्टर रामदेव झा एम० ए०, पी० एच-डी०

नेपालक शिलोत्कीर्ण मैथिली गीत



डाक्टर रामदेव झा एम० ए०, पी० एच-डी०

प्राध्यापक

मैथिली – विभाग

चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालय

दरभंगा



१९७२ ई०

❀ सर्वाधिकार— डाक्टर रामदेव झा

❀ प्रकाशक— मैथिली साहित्य परिषद्
विराटनगर, नेपाल

❀ प्राप्तिस्थान— * नवरत्न गोष्ठी, मिश्रटोला, दरभंगा
* पुस्तक केन्द्र, लालबाग, दरभंगा
* ग्रन्थालय, दरभंगा

❀ प्रथम संस्करण— १९७२ ई०

❀ मूल्य— २.५० पै०

❀ मुद्रक— आदर्श प्रिंटिंग प्रेस, फारबिसगंज (पूर्णियां)

द्रष्टव्य सन्दर्भ—

शिलोत्कीर्ण मैथिली गीत प्रस्तुत अछि। एकर की महत्व से तँ विद्वान लोकनि निश्चित करताह। एकर प्रस्तुतिमे श्री प्रफुल्लकुमार 'मौन' सशक्त प्रेरक रहलाह अछि। तदर्थ हार्दिक कृतज्ञता। एकर मुद्रणमे अनेकशः अक्षम्य अशुद्धिक हेतु निरुपाय भऽ क्षमायाचना मात्र आश्रय।

कार्तिक:-
धवल त्रयोदशी
१९७१ ई०

—श्री रामदेव झा
कबिलपुर, लहेरियासराय,
दरभंगा

भूमिका

नेपालक प्राचीन वंशावली, शिलालेख, पाण्डुलिपि आदि सभक ऐतिहासिक साक्ष्यसँ ई प्रमाणित भऽ गेल अछि जे उपत्यकाक मल्ल राजवंश कर्णाट राजवंशक उत्तराधिकारी छल। यैह कारण छल, जे मल्ल राजालोकनि संस्कृत, मैथिली एवं नेवारी साहित्यक साधनेटा नहि कयलनि अपितु साहित्य संवर्द्धनक हेतु कवि, नाटककार आचार्य आदि लोकनिकें प्रश्रयो देलनि।

नेपालमे मैथिली साहित्यक मुख्यतः तीनटा साधना केन्द्र जाग्रत छल सिमरौनगढ़, उपत्यका (भक्तपुर, कान्तिपुर, ललितपुर) एवं मोरंग। सिमरौनगढ़क कर्णाटवंशीय राजा नान्यदेवक सरस्वतीहृदयालंकार, हरसिंहदेवक राज्याश्रित ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकर, धूर्तसमागम आदि, उपत्यकामे मल्लराजा जगज्ज्योतिर्मल्ल, कवीन्द्र जगत्प्रकाशमल्ल, जितामित्रमल्ल, भूपतीन्द्रमल्ल, रणजीतमल्ल आदि एवं हुनक आश्रित कवि-नाटककार वंशमणि, काशीनाथ, शुभराज आदि, ओइनवार वंशक मोरङ्ग महीपति नरनारायण, जगनारायण एवं हुनक आश्रित कवि भीषम, धीरेश्वर आदिक स्फुट पद; सेन राज्याश्रित उमापतिक पारिजातहरण एवं अभिलेखसभ नेपालक प्राचीन मैथिली साहित्यक अमूल्य निधि थिक।

ओना तँ प्राचीन शिलालेख, स्तंभलेख वा ताम्रपत्र सभमे प्रायः राजप्रशस्ति एवं राज्यादेशसभ लिखल जाइत छल। मुदा राउलवेल (११ वीं सदी) कूर्मशतक (१००८-५५ ई०), विजयश्री नाटिका (१२१०-१८ ई०), हरकेलिनाटक, नृत्येश्वरदशक (प्रतापमल्ल, ने० सं० ७६२/१६७२ ई०) आदि जकां मल्लराजा लोकनिक शिलालेखमे मैथिलीगीत सेहो उत्कीर्ण कयल गेल, जकर मूल्यांकन साहित्येतिहासक दृष्टिसँ होयबाक चाही।

किछु देशी-विदेशी विद्वान सभक सत्प्रयासें उपत्यकाक शिलालेख सभसँ जाहि तथ्यसभक उद्घाटन भेल अछि, ओहिसँ मैथिली गीत साहित्यक

ाप्रि विशेष उल्लेखनीय अछि जकर पाठोद्धार कऽ मैथिली जगतक समक्ष ाहिलबेर रखबाक सम्पूर्ण श्रेय डा० रामदेवझा जीकें छनि।

अपन शिलोत्कीर्ण मैथिली गीताञ्जलिमे विद्वान अनुसंधाता जतेक ैथिली पदसभक पाठोद्धार कऽ प्रस्तुत कयलनि अछि, तकर अतिरिक्तो बहुत रास मैथिली पदसभ एखनो पाठोद्धारक प्रतीक्षामे छिड़िआयल अछि, जकर पाठोद्धार होयबाक चाही। एखनधरि प्रकाशमे आएल मल्लकालीन मैथिलीक उत्कीर्ण लेखसभमे सबसँ पुरान काठमाण्डूक लक्ष्मीनरसिंहमल्लक ताम्रपत्रकें (ने० सं० ७५३/१६३३ ई०) मानल जा सकैछ जे दरबार स्क्वा-यरक केन्द्रस्थ मन्दिरक देवालपर ठोकल अछि।

कालक्रमक अनुसारें दुइ गोट आर अवशिष्ट शिलालेख प्रस्तुत क़यल जा सकैछ—

१ शांखुक वज्रयोगिनी मन्दिर क्षेत्रक ने० सं० ७७५/१६५५ ई० क कवींद्र प्रतापमल्लक शिलालेख जाहिमे राजविजयमे निवद्ध एकटा मैथिली पद अछि—

॥ राज विजय रागे ॥ खर्जतिताले ॥

जय चण्डि चारु चकोर चंगिम लोल विमल विलोचने।
अचल नन्दिनी गिरिशवन्दिनि विपुल रिपुमद मोचने॥
समरहत शत शोणितासव सतत पान परायणे!
विविध फणिमणि कर्ण्ण कल्पित ललित भूषण भीषने॥
नीलकमल सहोदर द्युति रचित पुररिपु रंजने!
तारविषधरहार कुच रुचि विहित गिरि वर गंजने॥
प्रकट विकट जटासटाटवि भुजग राज विभूषिते।
परम शव शिव हृदय सरसिज साधु सद्म सुखोषिते॥

कर्तृका धृतिवर, विराजित दक्ष करवर नादिते ।
रभस कालित खड्ग पङ्कज नर कपालक मोदिते ॥
द्वीपि चर्म्म विनिर्म्मितामल वसन निवसन पण्डिते ।
उरग नूपुर तुन्दिलोदर वामनाकृति मण्डिते ।
समिति खण्डित मुण्ड मण्डित चण्ड हृदय सुमालिके ॥
विषम पितृ वनवास तत्पर देव पशुपति लासिके ।
तव पदद्वय धूलिलोलुप निकट विनिहत मालके ।
श्रीकवीन्द्र प्रताप नरपतिमम्व पालय बालके ॥

[देखू:- मेडाइवल नेपाल-४, शिलालेख सं० ५३, पृ० सं० ६३-६४]

२ भातगांव स्थित भैरवमन्दिरक क्षेत्रमे ने० सं० ८३७ (१७१७ ई०) क भूपतीन्द्रमल्लक शिलालेख जाहिमे नान्दिमालव एवं ललितभैरवीमे निवद्ध दूटा मैथिली पद अछि। यद्यपि इहो शिलालेखक पदसभक किछु आखरसभ भखड़ि गेल छैक तथापि मध्यकालीन मैथिलीक मर्मज्ञ लोकनिक आगां रख-बाक स्थितिमे अछि—

(१)

॥ नान्दि मालव ॥ चो ॥

प्रणव ओ भैरव देव ॥
भेल भयातपुरे ···· रकत सुवारण करु भूपतीन्द्र समधाने ॥
पुरजन मोलियपूजय मने मोदि करय महिष बलिदाने ॥
······ क युगजाल ······ सव हाटक कय मय रचल अरूपें ।
कनक कलश दय शोभनकर अति सुऊलित छत्र अनुरूपे ॥
स्वरं तिनूहु वाजय किंकिनि अतिसुन्दर उच कनक गिरितूले ॥
सुर प्रतिमा वहुत एक जाहि देखिय रविशशि रहु मन भूले ॥

वसु युचि जगमित हायन अति पावन राधसित फणि तिथि पाय ।
हम कयिय अयुताहुति सरतोष कय जन भोजन ········दाय ॥
[मन] गुणि कवि गण भावे भजु भैरव अनुषन अभिमत पाऊ ।
विश्व लक्ष्मीपति भूपति भूपतीन्द्र ओ रणजित होथु चिराऊ ॥

(२)

॥ ललित भैरवी ॥ चो ॥

भैरव पदयुग भजु मन लाय आवे ॥ ध्रु ॥
नील नीरद तनु शशधर भाल ।
तरुण तरणि तुल नयन विशाल ॥
मेरु अचल सम देवालय भास ।
ततय कयल तन्हि सानन्दे निवास ॥
हेमकलश पर सुन्दर ध्वजे (ध्वाजेः) ।
तकर उपर भल छत्र विराजे ॥
वसु वसु तसुमास दहन वरसे ।
माधव सित पक्ष भुजंग दिवसे ॥
अयुत आहुति दऊय कयल रागे ।
तेँ तोषल भूपतीन्द्रे दिविष ···· भागे ॥

नेपालक प्राचीन वंशावलीक अनुसार भूपतीन्द्रमल्ल चौंतीस वर्षधरि राज्य कयलनि । मल्लकालीन इतिहासमे हुनक राज्यकाल श्रेष्ठ नाटक, उन्नत वास्तुशिल्प एवं उत्कृष्ट मूर्तिकलाक दृष्टिसँ समानरूपेँ महत्वपूर्ण मानल जाइछ । जकर प्रमाण अछि हुनक किछु विशेष उल्लेखनीय नाटकसभ माधवानलनाटकम्, गौरीविवाहनाटकम्, पशुपति प्रादुर्भावोपाख्याननाटकम्, गोपीचन्द्रोपाख्याननाटकम्, कंसवधनाटकम्, जालन्धरोपाख्याननाटकम्,

रुक्मिणीपरिणय, विद्याविलाप आदि, अनेकानेक देवालय एवं भातगांवक राजप्रासादक प्रांगणमे स्वयं भूपतीन्द्रमल्लक स्वर्णाभ प्रतिमा अछि ।

प्रस्तुत शिलालेखक एकटा मैथिली पदमे भूपतीन्द्रमल्लक उल्लेख अछि एवं दोसर पदमे भूपतीन्द्र एवं रणजीतमल्लक चिरायुकामना कयल गेल अछि— 'विश्व लक्ष्मीपति भूपति भूपतीन्द्र ओ रणजित हौथु चिराउ।' एहि पदसभक बिश्लेषणसँ ई अनुमान कयल जा सकैछ जे एकर रचना हुनक कोनो आश्रित कवि द्वारा कयल गेल हो। संभवतः ओ कवि काशीनाथ छलाह। कियेक तँ भूपतीन्द्रमल्लक 'विद्याविलाप' नाटकमे देश एवं राज्यवर्णना तथा रणजीतमल्लक 'वाल्मीकिरामायणनाटकम्'क राज्यवर्णना काशीनाथे कयने छथि। एहिसँ ई ज्ञात होइछ जे काशीनाथ भूपतीन्द्रमल्ल एवं हुनक पुत्र रणजीतमल्लक राजसभाक सम्मानित कविनाटककार छलाह। काशीनाथक मैथिली पद 'भाषागीतसंग्रह' (राष्ट्रिय अभिलेखालयक पाण्डुलिपि संख्या ६६६१) मे सेहो उपलब्ध भेल अछि।

नेपालक इतिहासक अनुसारें रणजीतमल्ल भातगांवक मल्लराजवंशक अन्तिम स्वतन्त्र राजा छलाह। हुनक राज्यकाल १७२२ सँ १७७१ धरि मानल जाइछ। राष्ट्रिय अभिलेखालयमे हुनक लिखल बीसटा पोथी उपलब्ध भेल अछि—इन्द्रविजयनाटकम्, उषाहरणनाटकम्, कृष्णचरित्र-नाटकम्, पृथूपाख्याननाटकम्, रामायणनाटकम्, कृष्णकैलासयात्रोपाख्यान-नाटकम्, खट्वासुरवधोपाख्यान नाटकम्, चन्द्राङ्गदोपाख्याम नाटकम्, जलशायिविष्णवादि सृष्ट्यपाख्यानम्, वाल्मीकिरामायणनाटकम्, अन्धकासुर-वधोपाख्यानम्, कोलासुर, वधोपाख्यानम्, दिक्पालगणेशोपाख्यानम्, मान्धात्र्युपाख्यानम्, ययात्युपाख्यानम्, सुब्रह्मण्योपाख्यानम्, मदनचरित्रकथा, वीरवीरिणिकथा, षड्दर्शनकथा, हरगणकथा। (देखू- वीर पुस्तकालय नाट्यविषयक सूचीपत्र)

समस्त मल्लकालीन मैथिली साहित्यक साधनाकें देखैत ई कहल जा

सकैछ जे संगे दू सय वर्षक मैथिली साहित्यसाधनाक एकटा सुदिर्घ परम्परा समाप्त भऽ गेल।

नेपालक एहि मैथिली-अर्चनाक सांगोपांग रूप सुधी समाजकें नहि भेटि सकलनि अछि। ओहि दिशामे मित्र डा० श्रीरामदेवझा जी 'हरगौरी विवाह नाटक' ओ वर्त्तमान कृतिक रूपमे जे सामग्री प्रस्तुत कयलनि अछि से तँ अतीव प्रशंसनीय अछिहे, संगहि भावीअनुसन्धानक दिशामे महत्त्वपूर्ण पद-निक्षेप थिक। इति।

—प्रफुल्लकुमार मौन
संपादक "मैथिली"
मैथिली साहित्य परिषद, विराटनगर, नेपाल।



नेपालीय शिलालेख मे उत्कीर्ण मैथिली गीत

प्रो० डाक्टर रामदेव झा, एम० ए० पी० एच० डी०

मिथिला ओ नेपालक सांस्कृतिक ऐक्य ओ साम्यक मूल,इतिहासिकसुदूर अतीत में निहित अछि। राजनीतिक सीमाबन्ध ओहिमे बाधक नहि भेल अछि। एहि सांस्कृतिक एकता मे मिथिलाक अजस्र योगदान रहल अछि। मिथिलाक दार्शनिक, साहित्यिक, कलात्मक प्रतिभाक संपर्क नेपाल सँ अनादि काल सँ रहल अछि। किन्तु मध्यकाल मे ओ सम्पर्क औरो प्रगाढ़ भऽ गेल। हरसिंहदेव चौदहम शताब्दीक प्रथम चरणमे नेपाल गेलाहतँ हुनका संग मिथिलाक बौद्धिक जगतक महत्वपूर्ण भाग सेहो नेपाल गेला। तत्पश्चात मिथि-लाक विद्वत्समाजक गतागत वर्द्धिष्णु भऽ गेल आ नेपाल उपत्यका मे मैथिल लोकनि कें आश्रय ओ सम्माने नहि भेटऽ लगलनि अपितु उच्च ओ महत्त्वपूर्ण पद पर नियुक्ति सेहो कयल जाय लगलनि। एही क्रममे मिथिलाक देशभाषा मैथिलीक साहित्य नेपालक जीवनमे प्रवेश कऽ ओहि ठामक जनमानस कें प्रभावित-आह्लादित करऽ लागल। विद्यापति ओ हुनक सरणि केर कवि-साहित्यकारक रचना जेना भारतक पूर्वाञ्चल-बंगाल, उडीसा, आसाम आदिकें प्रभावित–प्रेरित कयलक तहिना नेपालो कें।

नेपालक एकटा विशेषता रहल अछि जे ओहि ठामक मल्ल राजन्य वर्ग मैथिली साहित्यकार ओ साहित्य सर्जन कें सम्मानिते सम्पोषिते नहि कयलनि अपितु स्वयं प्रेरणा-ग्रहण कऽ बहु संख्यक गीत नाटकादिक रचना करैत रहलाह। नेपाल उपत्यका मे मैथिलीक प्रभावक विस्तार ताहि रुपमे भेल जे कतोक शताब्दी धरि ओहि ठामक शिक्षित-आभिजात्य, सभ्य ओ सम्भ्रान्त वर्गक प्रिय भाषाक रुपम ई प्रतिष्ठित रहल। तें डा० प्रबोधचन्द्र बागची महोदय विचार व्यक्त कयने छलाह जे—

"नेपालेर प्राचीन वंशेर ओ प्रभाव सम्पन्न व्यक्तिदेर शिक्षार भाषा

छिल मैथिली कारण तांदेर अनेकेई मिथिला थेके गिये छिलेन।' [१]

वस्तुतः समस्त मल्ल राजत्वकाल मे मैथिली भाषाक ज्ञान, मैथिली गीत नाट्य साहित्यक अनुशीलन-सर्जन विकसित ओ परिमार्जित रुचिक मापदण्ड बनि गेल छल। परिणाम स्वरुप सोड़हम शताब्दीसँ अठारहम शताब्दी धरि नेपाल उपत्यकामे अव्याहत गतिसँ साहित्य-रचना होइत रहल। एहि अन्तराल मे जे किछु रचल गेल से परिमाण, प्रकार ओ स्तरक दृष्टिऍ अतुलनीय अछि। ओहि कालक नेपालीय मैथिली साहित्य मैथिली-साहित्येतिहासक गरिमामय अध्याय बनि गेल अछि।[२]

स्थितिमल्लक पौत्र यक्षमल्ल (१४०८-१४८१ ईसवी) क पश्चात् नेपाल राज्य हुनक पुत्र सभमे विभक्त भऽ गेल आ कालक्रमे तीन गोट प्रधान शाखा राज्य- भक्तपुर, कान्तिपुर एवं ललितपुरक अभ्युदय भेल। तीनू राज्यक मल्लराजवंशक छत्रच्छायामे मैथिली-साहित्य-सर्जना होइत रहल।

ओ साहित्य सभ अद्यावधि अनधीत-अप्रकाशित रुपमे काठमाण्डूक राष्ट्रिय अभिलेखालयमे सुरक्षित अछि। कतोक पाण्डुलिपि काठमाण्डू, भात गांव ओ पाटनक व्यक्तिगत संग्रहमे अज्ञात पड़ल अछि। किछु पाण्डुलिपि यूरोपक विभिन्न संग्रहालय सभमे छिड़ियायल अछि।

नेपालक ई साहित्य प्रायः तालपत्र ओ नेपालीय बसहा कागतपर लिखल अछि। एकर सभक लिपि विशेष रूपसँ मिथिलाक्षर एवं नेबारी अछि। किछु ग्रन्थ देवनागरी एवं अन्योलिपिमे लिखित अछि। नेवारी लिपि यद्यपि भाषाक हेतु नेवार जाति द्वारा प्रयुक्त होयत छल किन्तु थिक ई मिथिलाक्षर एवं देवनगरीक सम्मिश्रण तथा किछु वर्ण ओ मात्रा-योजनाक निजी प्रयोग सँ विकसित लिपि। अतः मिथिलाक्षरसँ परिचित व्यक्ति नेवारी पाण्डुलिपिकें कनेके आयास-अभ्याससँ पढ़ि सकैत छथि।

---

१. बंगीय साहित्य परिषद् पत्रिका, वंगाब्द १३३६, पृ० १७२

२. नेपाळीय मैथिली साहित्यक परिचयक हेतु द्रष्टव्य हमर शोध प्रबन्ध 'मैथिली मे शैव साहित्य'क अष्टम अध्याय।

नेपालक एहि मैथिली साहित्य पर बड़ अल्पकार्य भऽ सकल अछि। ओहि दिसकी तँ विद्वान लोकनिक ध्यान नहि गेलनि अथवा सुविधाक अभावमे ओहि दिस जतेक अनुसन्धान होयबाक चाही से नहि भऽ सकल। १६ म शताब्दीक अंत तमे १८६१मे जर्मनीसँ अगस्टस कोनरेडी "हरिश्चन्द्र नृत्यम्" प्रकाशित करौने छलाह। बंगाली विद्वान्मे म.म. हरप्रसाद शास्त्री, डा०प्रबोधचन्द्र बागची महोदय आदि नेपालीय मैथिली साहित्यक सूचनात्मक परिचय प्रस्तुत कयने छलाह। ननीगोपाल बन्दोपाध्याय 'नेपाले बाङ्ला नाटक' नामसँ चारि गोट नाटक प्रकाशित करौने छलाह।

पश्चात् मिथिलाक विद्वान्क ध्यान नेपालक एहि निधि दिस गेल आ ओ लोकनि यथा सम्भव कार्य कऽ रहलाह अछि। एहिमे उल्लेखनीय छथि-डा० जयकान्त मिश्र, डा० जयमन्त मिश्र, डा० शैलेन्द्रमोहन झा, प्रोफेसर लक्ष्मीकान्त झा आदि। एहि दिशामे कैम्ब्रिज विश्वविद्यालयक पाण्डुलिपिक आधार पर भक्तपुरक महाराज जगज्ज्योतिर्मल्लक प्रसिद्ध कृति हरगौरी विवाह नाटक[3] १६७० मे प्रकाशित भऽ सकल अछि।

नेपाली विद्वानक ध्यान एहि दिस विशेष जयबाक चाहैत छल, किन्तु से भेल नहि अछि। वीरलाइब्रेरीसँ प्रकाशित वृहत्सूचीपत्रक तेसर (नाटक) भागमे मैथिली नाटकक किछु परिचय मात्र अछि किन्तु सेहो 'नेवारभाषामयीकृति' कहि कऽ। श्री सूर्यविक्रम ज्ञवाली अपन'नेपाल उपत्यका को मध्यकालीन इतिहासक परिशिष्टमे मैथिली साहित्यक किछु उद्धरण मात्र देने छथि। डी०आर०रेग्मी ओ बालचन्द्र शर्मा अपन इतिहासमे यत्र-तत्र किछु उल्लेखमात्र कऽ कऽ इति कऽ देलनि अछि।

नेपालमे मैथलीक एहि हस्तलिखित ग्रन्थक अतिरिक्तो सामग्री सभ अछि। नेपाल उपत्यकाक तीनू नगर—काठमाण्डू. भातगाँव ओ ललितपुर(पाटन) एव लगपासक ऐतिहासिकस्थल सभमे हजारक संख्यामे धातु, प्रस्तर ओ काष्ठपत्र पर उत्कीर्ण अभिलेख सभ विद्यमान अछि। यदि नेपालकें अभिलेखक वन कहल

---

३. मि० रि० सोसाइटी, लहेरियासरायसँ प्रकाशित

जाय तँ अत्युक्ति नहि होयत।

एहि शिलालेख सभक अध्ययन-प्रकाशन अनेको विद्वान् द्वारा कयल जाइत रहल अछि। एहि क्षेत्रमे सर्वप्रथम कार्य पण्डित भगवानलाल इन्द्रजीक भेलनि विक्रमाब्द १९३७ मे ततः पर इंगलैण्डक सेसिल बेण्डल, फ्रान्सक सिल्वाँलेवी, नेपालक विद्वद्वर्ग — बाबूराम आचार्य, प० नयराज पन्त, योगी नरहरिनाथ, जनकलाल ढकाल, रामजी तेवारी, देवीप्रसाद भंडारी, शङ्करमान राजवंशी, धनवज्र बज्राचार्य, ज्ञानमणि, ऐश्वर्यधर शर्मा, घनश्याम सुवेदी, गौतमवज्रवज्राचार्य, कुमारधर शर्मा आदि द्वारा अनेकानेक शिलालेखक उद्धार ओ प्रकाशन कयल गेल अछि। फ्रान्सक जे० टुच्चीक शिष्य रेनिडरोनोली ६२ गोट शिलालेख 'नेपालीज् इन्सक्रीप्शन्स इन गुप्त कैरेक्टर' नामसँ प्रकाशित कराओल। अमेरीकासँ टी० ओ० वैलिंजर सेहो कतोक शिलालेख प्रकाशित कराओल। एमहर आबि काठमाण्डूक 'संशोधन मंडल, नामक संस्थाक तत्त्वावधान मे विभिन्न विद्वानक समवेत सम्पादकत्व मे बहुसंख्यक शिलालेख सभ 'अभिलेख संग्रह' नामसँ बारह भागमे प्रकाशित कयल गेल अछि। डी० आर० रेग्मी महोदय 'मेडाइवल नेपाल'क तेसर ओ चारिम खण्डमे कतोक सभ प्रकाशित-अप्रकाशित शिलालेखक संग्रह कालक्रमसँ व्यवस्थित कऽ प्रकाशित करौलनि अछि। नेपाल सरकारक पुरातत्त्व ओ संस्कृति बिभाग द्वारा काठमाण्डूक बीरपुस्तकालयसँ 'भक्तपुर-शिलालेख सूची' प्रकाशित करोओल गेल अछि।

एहि शिलालेख सभक भाषा संस्कृत, संस्कृत-नेवारी एवं नेवारी अछि। नेवारीकें देशभाषा, भाषा अथवा नेपाल-भाषाक संज्ञा देल गेल अछि। परवर्त्ती कालक शिलालेख गोरखाभाषाक सेहो प्रयोग अछि।

एहि सभने किछु शिलालेख मैथिली साहित्यक हेतु अत्यन्त महत्वक अछि। ओ अछि मल्लकालक ओहन कतिपय शिलालेख जाहिमे संस्कृत-नेवारीक अतिरिक्त मैथिली गीत सम सेहो उत्कीर्ण अछि। ओहि प्रकारक शिलालेख अत्र-विवेच्य अछि।

एहन शिलालेख किछु 'अभिलेखसंग्रह'क सातम भागमे तथा किछु 'मेडाइवल नेपाल'क चारिम खण्डमे प्रकाशित कयलो गेल तँ ओकर मैथिली अंशकें शुद्ध-

शुद्ध पढ़ले ने जा सकल आ जे पढ़ल जा सकल तकर पाठ ओ पदच्छेद अत्यन्त भ्रामक ओ अविश्वसनीय अछि। किन्तु एहिसँ संकलयिताक परिश्रम, वस्तुनिष्ठा एवं प्रदत्त सूचनाक महत्व कम नहि भऽ सकैछ। अग्रिम अनुसन्धाताकें ओहिसँ अमूल्य पथप्रदर्शन भेटैत छनि से कम मूल्यवान नहि अछि। वस्तुतः शिलालेखक मैथिली अंशक उद्धारक हेतु प्राचीन मैथिलीक भाषातात्विक ज्ञान अपेक्षित-अछि

'मैथिलीमे शैवसाहित्य' विषय पर शोधप्रबन्ध लिखबाक अनुसन्धान-क्रममे १९६७ इसवीक नवम्बरमासमे किछु दिनुक लेल काठमाण्डू-प्रवासक अवसर भेटल छल। ओहि समयमे नेपालीय मैथिली साहित्यक समबन्धमे बहुत किछु देखवाक, सुनवाक ओ जनबाक सुअवसर भऽ सकल। ओहि समयमे पूर्वानुसन्धानक अनुसरण कऽ हमहूँ ओहन नेपाली शिलालेख धरि पहुँचबामे समर्थ भऽ सकलहु जाहिमे मैथिली गीत उत्कीर्ण अछी। मुदा ई कहब कठिन अछि जे कतबाक शिला लेखमे मैथिलीभाषाक प्रयोग भेल अछि। हमरा एहन आठगोट शिलालेखक पता लागि सकल। एहि आठो शिलालेखमे सातगोट भक्तपुर (भातगाँव) अवस्थित, शेष एकटा काठमाडुमे। भक्तपुरक सातो शिलालेखमे एकटा भातगाँव राजदर-वारक भवानी-मन्दिरमे लागल अछि। एकर लिपिकाल नेपाल संवत ७८२ छैक। एहिमे राजा जगत्प्रकाश मल्लक रचित राजविजय, ललित भैरवी ओ संकीरण रागमे बद्ध चारिगोट मैथिलीगीत उत्कीर्ण छल। परन्तु उत्कीर्णाक्षरक भखडि जयबाक कारणे अत्यन्त दुष्पाठ्य अछि। शेष सातगोट शिलालेखक मैथिली अंशक उद्धार सम्भव भऽ सकल अछि।

मैथिली गीताङ्कित सातोगोट शिलालेखक कालक्रमानुसार परिचय नीचाँ देल जाइछ।

१. भातगाँव राजदरबारक लग खोमाटोलक भवानी-शङ्कर मन्दिरक दक्षिणभागमे स्थित शिलालेख। नेपाल संवत्—७८७

एहिमे जगत्प्रकाशमल्लक दुइगोट गीत उत्कीर्ण अछि। प्रसंगाक्रममे एवं भणितामे चाँदशेखर सिंह ओ अन्नपूर्णाक उल्लेख अछि। पहिलगीतमे अन्नपूर्णा द्वारा निर्मापित भवानी-शंकरक प्रासादपर कनक-कलश चढ़यबाक वर्णन एवं तिथि-संवत्सरक विवरण अछि।

२. भातगाँवक जिसवन चोकक भित्ति-शिलालेख। नेपाल संवत् ७९२

एहिमे जगत्प्रकाशमल्लक एकगोट गीत उत्कीर्ण अछि। गीतमे जगत चन्द्रक द्वारा कोनो देव-प्रासाद-निर्माण ओ मूर्त्ति स्थापनाक उल्लेख अछि। नेवारी गद्यमे जगच्चन्द्र मल्लदेवसेनक नामोल्लेख अछि।

३. भातगांवक जिसवन चोकमे स्थित शिलालेख। नेपाल संवत् ७९२

एहिमे जगतचन्द्रक एकटा नेवारी गीत ओ दोसर मैथिली गीत उत्कीर्ण अछि। नेवारी गीत मे 'जगतचन्दन, भणिता अछि। मैथिली गीतमे एकठाम 'जगतचन्द नृप' ओ दोसर ठाम सोझे 'जगत' अछि। नेवारी गीतमे सेहो ठाम-ठाम मैथिलीक छाप अछि जे भणिताक चरणसँ स्पष्ट होयत।

जगतचन्दन धार भंडार खार गूण।
मन्हयासे जुयमते सुनह निपूण॥

४. काठमाण्डुक तलेजुमन्दिरक प्रवेशद्वार पर स्थित शिलालेख। नेपाल संवत् ७९२.

एहिमे कविन्द्र प्रतापमल्लक नौ गोट गीत उत्कीर्ण अछि। मैथिलीगीतक दृष्टिऍ ई सभसँ पैघ शिलालेख थिक। शिलालेखमे ५५गोट पंक्ति छैक जाहिमे५१ पंक्तिमे मैथिली गीत अछि। शेष ४ पंक्तिमे तिथि-संवत्सरादि ओ अन्य विरण नेवारी भाषामे अछि। प्रत्येक गीतक अन्तमे क्रमाङ्क देल अछि। पाँचम गीतमे 'करनाट किशोरीक उल्लेख अछि। प्रतापमल्लक एकटा रानी करनाटवंशक छलथिन। दोसर, नेपालमे मिथिलाक करनाट राजा हरिसिंहदेव द्वारा नेपाल मे तुलजा भवानी (तलेजुमायि)क स्थापना भेल छल एवं मल्लराजवंशक कुल-देवीक रुपमे तलेजुमायिक पूजा होइत रहलनि। एहि ठाम 'करनाट किशोरी' क तेना उल्लेख अछि जाहिसँ तलेजु भगवती ओ करनाट कुलजा रानी दूनू अर्थ ग्रहण भऽ सकैछ।

५. भातगांव राजदरबारक कुमारी चोकक शिलालेख। नेपाल संवत ७९७। एहिमे जितामित्रमल्लक एक गोट गीत उत्कीर्ण अछि।

६. भातगाँव नगरक पश्चिम स्थित पोखरी लगक शिलालेख। नेपाल संवत-७९८। एहू मे जितामित्रमल्लक एक गोट गीत उत्कीर्ण अछि।

७. भातगाँव राजदरबारक पूबमे स्थित जलप्रणालीक शिलालेख। नेपाल सवत ७९८।

एहि मे जितामित्रमल्लक तीन गोट गीत उत्कीर्ण अछि।

ई शिलालेख सम मन्दिर, मण्डप, भवन आदिक निर्माणक ओ देव-मूर्त्ति आदिक स्थापनाक अवसर पर रचित ओ उत्कीर्ण भेल छल । किछु शिला-लेख आराध्य देवी-देवताक प्रीत्यर्थ सेहो उत्कीर्ण भेल छल।

उपर्युक्त सातो शिलालेख नेपाल संवत् ७८७सँ ७९८ केर मध्यमे उत्कोर्ण कयल भेटल अछि। इसवी सन्‌क अनुसार ई समय १६६७ सँ १६७८ क मध्यक अवधि भेल।

एहि शिलालेख सभमे सभमिला कऽ अठारह गोट गीत उपलब्ध भेल अछि। ई गीत चारि गोट कविक रचित थिकनि। चारु कविमे तीन गोटे मल्ल-राजवंशक राजा छलाह। एक व्यक्ति प्रायः मल्लवंशक सम्वन्धी सामन्त जकाँ लगैत छथि। दुइ गोट शिलालेख जगत्प्रकाल्लक थिकनि जाहिमे हुनक तीनगोट गीत अछि। जितामित्रमल्लक उत्कीर्ण तीन गोट शिलालेखमे हुनक पाँच गोट गीत छनि। जगतचन्द्रक एकगोट शिलालेखमे एकटा गीत मात्र छनि। प्रताप-मल्लक एकमात्र शिलालेखमे नौ गोट मैथिली गीत छनि।

नेपाली शिलालेख समसँ जे अठारहो गीत भेटल अछि ताहीमे एकटा कें छोड़ि शेष सभ गीतमे रागादिक निर्देश अछि। निर्दिष्ट राग निम्न लिखित अछि-केदारा, गौरी, जयज (य)वन्ति बेलावल, धनाश्री, पहाडिया, भैरव, मालश्री मालश्री-राजविजय, वसन्त, विहागरा, एवं सोरथ(ठ)। गीत सभक अन्तमे कवि-नामक भनिता देल अछि। भनिताक क्रममे कोनो"कोनो गीतमे अन्यो व्यक्तिक उल्लेख भेल अछि। कोनो-कोनो गीतक मध्योमे अन्यव्यक्तिक नामोल्लेख प्रसं-गतः अछि। ओ नाम सभ अछि—अन्नपूर्णा, चाँदशेखर, जगतचन्द, कर्णाट-किशोरी आदि।

शिलालेखक गीत सभ अछि भक्ति-भावना-प्रधान। देवी गीत देवी-वन्दना-विषयक अछि। जितामित्रमल्लक एकटा गीतमे नटेश्वर नृत्यक वर्णन अछि। देवी-वन्दनामे सभसँ मर्मस्पशी गीत प्रतापमल्लक छनि। कविक व्यक्ति-गत जीवनक अनुभूति, व्यथा-कथा आत्मनिवेदक रूपमे अभिव्यक्त भेल अछि प्रतापमल्ल महत्वाकांक्षी, आत्मप्रशंसक ओ अहंकारी व्यक्तिक रुपमे इतिहासमे वर्णित छथि। किन्तु वर्तमान गीतमे देवीक चरणमे निरीह भावसँ आत्मसमर्पण

कविक व्यक्तित्वक अभिनव स्वरुप प्रकट करैत अछि। अन्यो कविक गीत मे भक्तिक उद्रेक विद्यमान अछि।

एहि गीत सभक भाषा परिमार्जित ओ साहित्यिक अछि। मध्यकालिक भाषाक स्वरुप एहि ठाम पूर्णरूपमे सुरक्षित भेटत। किन्तु किछु ध्वनि ओ रूपक वैशिष्ट्य स्पष्टरूपें परिलक्षित अछि। विशेषतः 'ट'वर्गक 'त'वर्गमे एवं 'ल' केर 'र' मे परिवर्त्तन एतऽ भेटैत अछि, यथा—'चढ़ावल' कें 'चथावल', 'जेठ' कें 'जेथ', 'दिठि' कें 'दिथि' 'पठावल' कें'पथावर' 'कयल' कें'कयर', 'राखल'कें'राखर', 'रहलि'कें 'रहरि' आदि। कतहु-कतहु आरम्भक'ए'कें 'य' कऽ देल गेल अछि,जेना-एहि-यहि, एक-यक आदि। 'ख' केर स्थान पर अधिक ठाम 'ष' केर प्रयोग भेल अछि।

जाहि चारि गोट कविक गीत एहि शिलालेख सभमे उत्कीर्ण अछि ताहिमे जगत्प्रकाशमल्ल एवं जितामित्रमल्लक चर्चा इतिहास ग्रन्थमे होइत रहल अछि। किन्तु जगतचन्द्रक चर्चा नहिये भेल अछि। कारण जगतचन्द्र कें जगत्प्रकाश मल्लक नामान्तर होयबाक धारणा छल। प्रताप मल्लक मैथिली कविक रूपमे एतऽ पहिल परिचय भेटि रहल अछि। एकर कारण अछि जे हुनक ई पहिले कृति प्रकाशमे आबि रहल अछि। शिलालेखक ई मैथिली गीत सभ मैथिली साहित्यक उल्लेखनीय उपलब्धि मानल जायत तँ मैथिली साहित्येतिहासक हेतु कवीन्द्र प्रताप मल्लक उपलब्धि विशिष्टतम मानल जयबाक चाही।

एहि क्रममे उक्त चारू कविक साहित्यिक परिचय उपस्थित करब अपेक्षित लगैत अछि। एहि परिचयसँ मैथिली साहित्येतिहासमे हिनका सभक महत्व ओ स्थानक आकलन करबा मे औचित्य भऽ सकत।

जगत्प्रकाशमल्ल

जगत्प्रकाशमल्ल भक्तपुरक राजा छलाह। ई जगज्जोतिर्मल्लक पौत्र ओ नरेशमल्लक पुत्र छलाह। हिनक राजत्वकाल १६४४ सँ १६७२ इसवी धरि छलनि। जगत्प्रकाशमल्लक साहित्य संगीतमे अत्यन्त रुचि रखनिहार व्यक्ति मात्र नहि अपितु ओहिमे ओ स्वयं पारंगत छलाह। साहित्य संगीतक मर्मज्ञ रहबाक

कारणे हुनका 'गन्धर्व विद्या गुरु' एवं 'कवीन्द्र' कहल जाइत छलनि।

हिनक रचल ओ रचाओल बहुसंख्यक गीत ओ नाटक सभ उपलब्ध अछि। हिनक नामसँ सम्बद्ध सात गोट नाटक काठमाण्डुक राष्ट्रीय अभिलेखालयमे सुरक्षित अछि, यथा [४] 'उषाहरण नाटक' (१/१५६४), नलीय नाटकम् (१/३९७),पारिजात हरणम्(१/४२०),प्रभावती हरणम् (१/३९५),मलयगन्धिनी (१/४३६), मूलदेव शशिदेवोपाख्यानम् (१/३७७)एवं माधव-मालति(१/६३९)। डा० जयकान्त मिश्र दुइ गोट आर नाटक—मदन चरित एवं रामायण नाटक क उल्लेख कयने छथि[५]। एहि सभमे उषाहरण, मूलदेव शशिदेवोपाख्यानम् ओ माधव मालतिक गीत सभमे 'जगतचन्द्र' नामक भणिता अछि। 'प्रभावती-हरणम्' क राजवर्णनमे 'वंशमणि' क भणिता भेटैत अछि।

'नलीय नाटकम्' क नान्दी गीतमे शिवक प्रदोष नृत्यक बड़ मनोहारी वर्णन कयल गेल अछि। गीत द्रष्टव्य थिक—

चाँद वदन हर चाँद तिलक धर, चाँद शेखर वर नाम।
भमिते भमय कय सदाशिव नाचर, गौरी राखल दिश वाम॥
दुथि दुगुण मुख सेहि भेल ताळधर, माधव मुरज वजावे।
मुनि गण गावर सुसवदे पिक सम, रवि शशि झरझर आवे॥
गणपति सेनापति दुहु जन कए रह, सानन्द नृत्य विहार।
गगण एषण भेल फुलक वृष्टि अति, करि नृप देल जलधारे॥
'जगत्प्रकाश' भन 'चाँदशेखर' धन, भुगुति मुगुति देबि सारे।
जगत जननि करू साधक अभिमत, अपार करुणा सिंधु पारे॥

जगत्प्रकाशमल्लक रचित गीत सभ सेहो प्रचुर संख्यामे भेटैत अछि।

---

४. हस्तलिखित ग्रन्थक आगाँ कोष्टकमे देल गेल अंक ओ संख्या काठमाण्डूक राष्ट्रीय अभिलेखालयक सूची ओ ग्रन्थक क्रमाङ्कक सूचक थिक।

५. हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर, खण्ड-१ पृ० २६५।

'भाषा गीत'[६] तथा'नाना गीत संग्रह'(१/८७;३/१४६)मे अन्यकविक संगहिनको गीत सभ संकलित छनि। हिनक गीत सभक स्वतन्त्रो संग्रह सभ विद्यमान अछि, यथा—पद्यसमुच्चय(१/१५०२), नाना रङ्ग, गीत संग्रह वा गीतपञ्चक (१/३४६), नानार्थ देवदेवी गीत संग्रह (१/३५७)। ओ अपनहिहाथें एक गोट 'गीतावली लीखि नेपाल संवत् ७८१ (१६६१इसवी)मे ब्राह्मण कें दानमे देने छलाह[७]। एतऽ नाना गीत संग्रह सँ जगत्प्रकाश मल्लक कतिपय गीत उद्धृत कयल जाइत अछि--

(१)

केदार मालव

शशि विनु ओरे रजनि सहजे अति मलिन,
की तनु खीन, सखि तेजी हम जर (ल) विनुमीन।
गुनमत ओरे गुपुतहि भेल मणि हमर,
की अति भल, सहचलि (रि) दिथि कर कमल।
जे विनु ओरे जीवक करेश अति वाधल,
की जरधर, निविडहु देखि नहि पाइल।
दह दिशि ओरे मलिन देखल जगत,
की जतागत, हरि रे (के) ल पिय मोरि रत।
कहलहु ओरे जगतप्रकाश नृप निअ दुख,
की शशि सुख, 'चान्दशेखर' रह मोहि सुख।

---

६. तत्रैव, पृ० २४६, टिप्पणी क्रमाङ्क-१७६

७. डी०आर०रेग्मी, मेडाइवल नेपाल,खण्ड--२, पृ० २२०-२१

(२)

कौशिक ॥ चो ॥

पिय सखि ओरे द्वितीय पहर वेरि आयल,
की मोहि थर, नयन देखल हमे सादर ।
दुर गेल ओरे जीवक दोसरि सखि किछु खन,
की ओहि धन, तुअ तुल नहि थिकि जत जन ।
तोहु विनु ओरे पति विसरेखे हम रति,
की शुभ मति, तेजलहु सहचलि युवति ।
मन किन्तु ओरे 'जगतप्रकाश नृपति' वर,
की पुरहर, 'चान्दशेखर सिंह' अति भल ।

(३)

आसावलि ॥ ख ॥

सुजन सुहृदय सुगुन संयुत सुकरि अति अभिराम ।
सुसखि सुमलओसुमन निशिदिन कलव जपतुअनाम ॥
सुखक आकल सुरस सागर नयन तुअ अलविन्द ।
कपोल निलमल चिवुक सुन्दर वदन पुनिमक चन्द ॥
तोहहि भूषण तोह हि सुवचन तोहहि जीवन अधार ।
तोहि साजनि परसमनि थिकी हमर हृदयक हार ॥
हमरि एहि मति सखिहि पय गति झाखि तेजव परान ।
कहथि परकाश करएल तुअआश चान्दशेखरक ध्यान ॥

हिनक गीत सभक भणिता मे जगत्प्रकाश, जगत प्रकाश, प्रकाश, परकाश नाम अबैत अछि। डा० जयकान्त मिश्र जगतचन्द, चाँदशेखर तथा

नृप चन्द्रप्रकाश भणितायुक्त गीत कें सेहो जगत्प्रकाशेक रचित मानने छथि।[८] किन्तु ई तीनू कवि भिन्न-भिन्न व्यक्ति थिकाह । जगतचन्दक सम्बन्ध मे एही प्रकरण मे विशेष रूपें विचार कयल जायत। चाँदशेखर सिंह जगत्प्रकाशमल्लक प्रायः अमात्य छलथिन आहुनके प्रयासें जगतप्रकाशमल्लकें अन्नपूर्णालक्ष्मी नामक पत्नी भेटलि छलथिन। चाँदशेखर अत्यन्त प्रभावशाली ओ राजाक श्रद्धापात्र छलाह। जगत्प्राशक शिलालेख सभमे चाँदशेखरक बड़ आदर ओ प्रशंसापूर्वक उल्लेख भेल अछि । हुनक गीत ओ नाटको मे चाँदशेखरक बेर-बेर उल्लेख कयल गेल अछि। उपर उद्धृत चारू गीत मे चाँदशेखरक नामक उल्लेख अछि । शिलालेखो क दुइ गोट गीत मे एहि नामक उल्लेख देखल जा सकैछ। चाँदशेखरक स्वरचित गीत सभ सेहो 'भाषा गीत' मे भेटल अछि।[९]

जितामित्रमल्ल

जितामित्र मल्ल जगत्प्रकाश मल्लक पुत्र छलाह। हिनक राजत्व १६७२ सँ १६६६ इसवी धरि रहल। ईहो अपन पिता एवं प्रपितामहे जकाँ मैथली साहित्यक रचना ओ संपोषण कयलनि। हिनका सँ सम्बद्ध नाटक सभ अछि-सती-वियोग वा कुमार-प्रादुर्भाव (४/७५, ६३६), कलीय मथनोपाख्यान (१/४६०) जैमिनिभारत नाटकम् (१/११२१), वरुथिनी हरण (४/६४०), मदालसाहरण (१ ३५४), महाभारत नाटक (१ १४७८) एवं रामायण नाटक (१ ३६७) । श्री रेग्मी महोदय हिनक 'अश्वमेघ नाटक'क चर्चा कयन छथि जकर विषय वस्तु जैमिनि भारत सँ मिलैत अछि।[१०] डा०जयकान्त मिश्र हिनक गोपीचन्द्र नाटक, उषाहरण, नवदुर्गा नाटक ओ 'भाषा-नाटक जितामित्र मल्लक एकटा आर नाटक 'मंगल महोत्सव' क खंडित

८. हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर, खण्ड-१, पृ०२४६.४८
६. तत्रैव, पृ० २४७, टिप्पणी - १७६ (७)
१०. मेडाइबल नेपाल, खण्ड-२, पृ० २३३

पाण्डुलिपि जयनगर क्षेत्रसे प्राप्त भेल अछि। देखू 'मिथिलामिहिर'(पटना)-१३जून १९७१ई०—संपादक । क चर्चा कयने छथि ।[११]

एकटा और रामायण नाटक भेटल अछि जाहिमे श्रीधर कवि कृत राजवर्णना ओ देश वर्णना अछि । 'सती वियोग' मे अमिअकर वा अमित कविक राजवर्णना अछि । 'बरुथिनी हरण' मे द्विज शिवहरि केर ओ 'महा-भारत' मे जगतचन्द कविक समग्र गीत छनि ।

जितामित्रमल्लक कालीयमथनोपाख्यानक नान्दी गीत एतऽ दैत छी—

भावहु शङ्कर गौरि अरधङ्गा ॥ ध्रु० ॥
भव भय हर हर धर जप माला
कानन कुण्डल गल मुण्डमाला ॥
चन्द्र तिलकशिर गङ्ग भुजङ्गा
पिङ्गल जट नट हन अनङ्गा ॥
पञ्चवदन नटवर दिगवसना
मङ्गल घट भज गिरिवर शयना ॥
कहय कविवर जितामित्र देवा
छोड़ु सकलधंध करु शिव सेवा ॥

जितामित्रमल्लक किछु स्वतन्त्रगीत 'भाषागीत' मे भेटैत अछि ।[१२] हिनक कोनो स्वतन्त्र गीत-संग्रहक पता एखन धरि नहि लागि सकल अछि। शिलालेख सभमे जे पाँच गोट गीत प्राप्त भेल अछि ताहिमे जे ओज, प्रवाह, शब्द-सामर्थ्य विद्यमान अछि से सिद्ध करैछ जे जितामित्रमल्ल नाटकक अतिरिक्त स्वतन्त्र गीतोक रचना प्रचुर मात्रा मे कयने होयताह ।

११. हिष्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर, खण्ड-१, पृ० २६६-६७
१२. तत्रैव, पृ० २४६

जगतचन्द्र

जगत्प्रकाश मल्ल ओ हुनक पुत्र जितामित्र मल्लक राजसभामे जगत चन्द्र नामक एक महत्त्वपूर्ण कवि-नाटककार छलाह। राष्ट्रीय अभिलेखालय मे एकटा ग्रन्थ भेटैत अछि—'जगच्चन्द्र प्रभात कृत्यादि विधान पद्धति' (१/७)। प्रायः ई जगतचन्द्रेक रचित थिकनि । 'भाषा–गीत' मे/'जगतचन्द' क भणिता सँ युक्त कतोक गीत भेटैत अछि।[13] एकटा शिलालेखमे जगतचन्द्र द्वारा मूर्त्तिस्थापनाक उल्लेखपूर्वक जगतप्रकाशमल्लक एकटा मैथिली गीत अछि। एहि शिलालेखक नेवारी अंशमे उल्लेख अछि--'श्री श्री जय जगच्चन्द्र मल्ल देवसेन'। दोसर शिलालेखमे जगत चन्द्रक नेवारी एवं मैथिलीमे एक-एक गोट गीत भेटैत अछि। ओहिमे हुनक नाम स्वतन्त्र व्यक्तिक रूपमे अछि । मैथिली गीतक भणितामे स्पष्ट 'जगतचन्द्र नृप' कहल गेल अछि। अतः जगत-चन्द्र एवं जगत्प्रकाश मल्ल एक व्यक्ति नहि भऽ सकैत छथि ।

जगतचन्द्रक महाभारत नाटकक पुष्पिका वाक्यमे अछि—श्री श्री जिता-मित्रमल्ल देवस्य तथा श्रीश्री उग्रमल्ल देवस्य सम्राङ्ग राज्य वृद्धिरस्तु। ... संवत् ७९६ पौष शुदी १२ शुभम्।[14]

एहि सँ तीन वर्ष पूर्व २८ नवम्बर १६७२ कें जगत्प्रकाशमल्लक देहाव-सान भऽ गेल छलनि।[15] एहू सँ सिद्ध होइत अछि जे जगतचन्द्र भिन्न व्यक्ति छलाह आ जगत्प्रकाशमल्लक पश्चात् हुनक पुत्र द्वयक आश्रयमे छलाह।

जगतचन्द्रक नामांकित चारिगोट नाटक भेटैत अछि।ओ अछि—माधवमालति (४/६३६ मूलदेव शशिदेवोपाख्यान (१/३७७), उषाहरण (१/१५६४) एवं महाभारत (१/१४७८)।

माधव-मालति जितामित्रमल्लक उपनयनक अवसर पर प्रस्तुत भेल

---

१३. तत्रैव, पृ०२४७, टिप्पणी—१७६ (५-६)

१४. बृहत् सूची पत्रम्, भाग—३, पृ० ४३

१५. मेडाइबल नेपाल, खण्ड-४, परिशिष्ट, पृ० ३४

छल । ओहि नाटकमे नायक प्रताप शेखरक प्रवेश-गीत निम्नरूपक अछि-

प्रतापशेखर नृप परवंश वेश—
रत्न प्रभा रानी रति सम वेश ।
.... नन्द एक भूरिवसु नाम—
देवरात गुनि थिक पुलयत काम ।
प्रचंडशेखर वर कोट वर जाती—
सबहि भांति भूप कर परिपाती ।
जगतचन्द्र कवि गावय गीत—
चण्डि चरण आवय मो वछहीत ।

उपाहरण नाटकक नान्दी गीत निम्न रूपक अछि---

मृगधर महेशर गंग जटापर दसवांगहि त्रिशूल तीरा ।
पात्रडमरु वर सब सए अए भल लिंग मुरुति धर मोरा ॥
अभयहि जपमाल विधुललाट तुअ अरधंग पारवति प्राने ।
वीर मसान रह निरंजन शून्य घर योग समाधि अति निधाने ॥
वृषभ चधल शिव बहुतहु नहुनहु देवि देखिदेखि पयाने ।
पंच वदन हर बाघ चरमे धोति भमकरि अंग तराने ॥
दिगबसन तोहबनावल अपनुके अहि पति भूषण समाजे ।
कविगण मुकुटहि जगतचन्द अत्रे जननिह सेवत्र काजे ॥

एहि नाटकमे सूत्रधार प्रवेश कऽ अष्टभुजी भगवती एवं आदि सूत्रधार सदाशिवक वन्दना करैत अछि---

जय देवि वर देह करहु उधार-
तोहहु कयल मात जगत विचार ।
वाण खरग चक्र पात्र धर हाथ—
चरम गदा धनु विंदु तुअ साथ ।

केसरि उपर छथि त्रिभुवन माता---
सुर असुर नर जगहुक धाता
जगतचन्दन भन आदि सूत्रधार ।
शंभु सदा शिव करथु विहार ।

महाभारत नाटकक नान्दी गीत निम्न रूपक अछि--

सकल स्वरुप हर तिनि नयन तुअ रवि शशि अनलहु तूल
धवल वरण तनु छाउरे झपलहु जटापर अर्ध्दचन्द्र मूल ॥
त्रिशूल डमरुधर त्रिलोकहि शिरिजल त्रिपथ(द्र)हि वसधरा तोरा।
चरण सरोरूह जेजन सेवय ततहि कल्यान कर मोरा ॥
गिरि सुता संयुत गणेश सहित सुत मन दय वर देह तोहे ।
प्रथम नान्दि गाय अपने नाचल शिव भमिते भमय वउ सोहे ॥
जगतचन्द कृत गित परिशोभन हरषथु देखि देखि रो(लो)गे ।
जितामित्र उग्रमल्ल चिरंजीव होअथु सहस्र वरिष करु भोगे ॥

शिलालेखमे एकटा मात्र हिनक गीत भेटल । एहि ठाम हिनक चारि गोट नाटकीय गीत एहि हेतु उद्धृत कयल गेल अछि जे मैथिली साहित्यक इतिहासमे स्वतन्त्र व्यक्तित्वक स्थापनाक संगहि हिनक काव्य-रचनाक क्षमता ओ वैशिष्ट्यक परिचय पाठक वर्गकें लागि सकनि ।

प्रतापमल्ल

प्रतापमल्ल नेपाल उपत्यकाक कान्तिपुर (काठमाण्डू) शाखा-राज्यक राजा लक्ष्मीनरसिंहमल्ल कपुत्र छलाह। हिनक राजत्वकाल १६४१ सँ १६७४ इसवी धरि रहलनि। ई अत्यन्त प्रतापी ओ महत्त्वाकांक्षी राजा छलाह। तहिना काव्य-संगीतक क्षेत्रमे अत्यन्त पटु छलाह। तें हिनक उपाधि 'कवीन्द्र' छलनि। हुनक यावन्तो उपलब्ध मुद्रा एवं अभिलेख सभमे 'कवीन्द्र' उपाधिक निरपवाद

प्रयोग भेल अछि । धार्मिक-प्रवृत्ति हिनकामे विशेष रूपें विद्यमान छलनि । मन्दिर,मूर्त्ति एवं शिवलिंगक स्थापना ई प्रचुर संख्यामे कयने छलाह । एहि संग विभिन्न अवसर पर विभिन्न देवी-देवताक स्तोत्र सभ रचि रचि कऽ शिला-लेखादि पर अंकित करौने छलाह । ई स्तोत्र सभ प्रचुर संख्यामे काठमांडुक विभिन्न अंचलमे औखन उपलब्ध अछि । एहि स्तोत्र सभक भाषा संस्कृत थिक । यदि मूल्यांकन कयल जायत तँ संस्कृत साहित्यमे प्रतापमल्लक स्तोत्रक बड़ विशिष्ट स्थान निर्धारित भऽ सकत ।

मैथिलीमे ओ स्वयं नाट्य रचना कयलनि वा नहि तकर निश्चय भावी अनुसंधान पर निर्भर करैत अछि । परन्तु प्रसिद्ध विद्वान, कवि ओ नाटककार 'वंशमणि उपाध्याय' हिनकहि आश्रयमे रहैत हिनकहि महातुला-दान महोत्सवक अवसर पर शाके १५७२ (१६५२ इसवी) मे 'गीत दिगम्बर नाटक' (१/३८२) क रचना कयने छलाह जकर प्रस्तावनामे ओ अपन आश्रयदाता प्रतापमल्लक प्रभूत प्रशंसा कयने छथि ।

कवीन्द्र प्रतापमल्ल गीतक रचना कयने छलाह ताहि दिस नेपालोक इतिहासकारक ध्यान नहि गेलनि अछि । राष्ट्रीय अभिलेखालय मे 'गीतम् प्रतापमल्लीयम्' (१ १६९६—१८४१), 'गीत गोविन्दम् प्रतापमल्लस्य' (१/१६९६--२), 'प्रतापमल्ल विरचित गीतम्' (१६९६--१५५४) कहि कऽ अनेक गीत संग्रह सभ भेटैत अछि । ओहि संग्रह सभक गीतक भाषा संस्कृत मैथिली वा नेवारी थिक से तँ अध्ययनेसँ ज्ञात भऽ सकत । तथापि कम सँ-कम एकटा शिलालेख काठमण्डुक तलेजु मन्दिर मे एहन भेटल अछि जहि-मे प्रतापमल्लक विरचित देवी-वन्दना विषयक नौ गोट विलक्षण मैथिली-गीत उत्कीर्ण अछि । एकहि गोट शिलालेखमे एतेक मैथिली गीत हिनकहि भेटल अछि । ई गीत सभ प्रतापमल्लक काव्य-सर्जनक क्षमता, मैथिलीभाषा एवं छन्द पर अधिकारक मापदण्ड अछि ताहिमे सन्देह नहि ।

शिलालेख संख्या – १

वसन्त ॥ चो ॥

जेहि मोरि जिव तुल, ' चन्द्रशेखरसिंह ', सेहि देलि यहि धनि वारि,
जगत प्रकाश भूप, पावली घरिनि वर, 'अन्नपुरना' नाम नारि ॥
सेहि धनि कय रह, प्रासाद अति भल, तथहु देविहि शिव मूल,
नेपाल मण्डल का, संवछल अवे, वाजि वसु मुनि मोति कूल ॥
माघक महिना, दशमि सुतिथि पर, जेथ नक्षत्र वज्रयोगे,
गुरुवार सुदिवस, कनक कलश भल, चधावल धरमक भोगे ॥
भनय 'प्रकाश भूप', गीतहि मनोहर, एहि खने ऋतु ऋतुराजे,
' चाँदशेखरसिंह ', तुअ तुल नहि जन, मोरि हृदि तोहह विराजे ॥

वसन्त ॥ प्र ॥ ॥ २ ॥

मात रमनमय सहित वसन्ते,
रस निरतन (ल) देवि शिवकन्ते ॥
पिरितिक वस भय भेल यक देह,
करे नहि तन तेज हरहि सिनेह ॥
गाढ आकम कयर शंकर भवानि,
प्रेमक पास बाटि राखर सयानि ॥
'परकाश' भन 'चाँदशेखर' सुभाव,
'अन्नपूरना' तिरि सदा रँग पाव ॥

शिलालेखसंख्या—२

॥ ३ ॥

प्रथम जननि का गृह मण्डक - जिनल कयलहु उत्तम उधारे-
प्रेमहि जगतचन्द बनायरा राखर ....
केहु कयल पल विगारि नडावय ---- तकराक अति होय पाप

निय सुत इव कय जेहि विदा न करे -ते जनक दुर जा(जाप?)॥
मूलहि सदन सओ पुरुव दिश गृह -- नव घर एक ऐहिं लेखे—
नरपति खेलय के उचित मनोहर -- स्वरगक मूल न देखे ॥
जगतप्रकाश मन धरमहि चिन्ति कहु--परलोक फल भल होयि --
शिव शिव शंकर पारवति कमला -- दुहु विनु गति नहि कोयि ॥

शिलालेखसंख्या—३

॥ ४ ॥

॥ धनाश्री ॥ चो ॥

जय जय भयवति दानव नाशिनि -- रण गुणि गुपुत विहारि
शुंभ निशुंभ तनु सरग पथावर -- महिषासुर विर मारी ॥
चण्ड मुण्ड परि शूरहि विदारन -- रक्त बीज क्षयकारि—
बहु भुज बहु मुख बहु पदहु दिथि -- चण्डि सुभित नारि ॥
शिवहु न पारल तिपुर असुर वध -- उपासना कयल भवानि--
तखने मारले शिवे तिनहु एक शरे - तेहि ते न असंभव मानि ॥
मन मने गुणिय गुसावनि पद परि - जगतचन्द नृप वाणि--
त्रिभुवन तारिणि देवभयहारिणि - मदना तुलहि रानि ॥
आन न शरण होअ तोहुहु अवलंबे-जगतहु करिय उबारे हो मायि॥

शिलालेख संख्या – ४

॥ ५ ॥

सोरथ रागे ॥ खर्जति ताले

अवस तोह विनु प्रणति वारव
जाव वरु जग जन महारव

आन देव न दीन माधव भाव राधव हे
एक सकल भरोस अनुखन
एक वल विसवास अछमन
आन अधम अगन्य के गण वुझि निअ मने हे ॥
याग जुगुति सुयज्ञ जप जत
निखिल क्लेश निदान अछ मत
जानि भजलाहु चरण पंकज तेजि त्रिभुवन हे ॥
सतत जप तुअ नाम जे वहु
कुपित यम तसु करत कीदहु
के न निज अपराध दुर कर प्रवल संगहि हे ॥
वचने मने तनु कर्म्म पूजने
उपज कत नहि भाव अनुखने
हृदय हरषे न ठाम पावय सुमरि तुअ पद हें ॥
कालिका तनु जलद निर्म्मल
सुजल करूणा विन्दु लवुधल
भूप मल्ल प्रताप चातक अभय दहोदिस हें ॥१॥

॥ ६ ॥

सोरथ रागे ॥ खर्जति ताले ॥

मात किअ अवलंब धरव जिव सुत सओ वंक तुअ रीति ।
अपन पालित कइए किंकर फिरि देहो तसु भीति ॥ ध्रुव ॥
सहस सेवाए विविध पूजने अ.थिर अलप प्रसाद ।
अनिक पर अपराध याइए मूल सओ अवसाद ॥
पुरि मनोरथ तोहहि तोरल सकल आसा गेल ।
एतय वुझि विचारि कए कहु ओहु संसय भेल ॥

ऊच सेवा तेजि करए कहु नीच सेवयिते लाज
तोहर सेवने सत्रु बाढल देह दूषण समाज ॥
कालि करम विचारि जदि तोहे देवि पुरव काम
जगत करुणामय वोलावह तेजि जनि मोहि ठाम ॥
आज भूषणे हीनि होएब अवस निअ मन जानि
कालकूत सओ प्राण राषंल निमिष भव करु वानि ॥
ऐसन कालिक सोभाव कीदहु तोहहु तेजल नेह
सुत वियोगहि किछु न चेतह भुषणे भूषह देह ॥
हमर जे भेल सेहे वरु भल मल्ल परताप भान
आवहु से कर विमुख जे नहि ओएर तुअ पद आन ॥२॥

॥७॥

धनाश्री रागे ॥ खर्जति ताले ॥

किदहु करम मोए हीन रे मात जनि दुषरे धिया
कीदहु कुदिवस करए रख लाअहु जनि मृग व्याधक फसिया ॥ ध्रु ॥
कीदहु पुरुव सुकृत फल भुगुतल निफल भेल काजे
कीदहु विधि वसे गिरिवर नन्दिनि भेलिहे विमुखि मोहि आजे ॥
कीदहु पर सेवक सओं न पालह ते निज जन अवसने
कीदहु करम. अछल मोहि अनुपम जे तैसन परिजने ॥
कीदहु तसु विपरित हमे पाव्रल ऐसन सेवक समाज
गुन गौरव सवे किछुओ न पावल केवल पलय (पाप?) समाज ॥
सुकवि प्रताप मही पति गोचर जननि करह अवधान
ऐसन सेवक सओ गंजन सवे भेल अवहु करव हे समधान ॥३॥

॥८॥

पहडिया रागे ॥ गण्डल ताले ॥

अछल सकल भरोसे तुअ पदे होएत सुत सत मोहि
भजन फल भल देल सुन्दरि अधिक कि कहव तोहि ॥
आज कालि जे होएव परसनि तोहहि ई छल भान
आसे कुवुधल जनम वहि गेल झखैते विकल परान ॥
जखने जोवन रतन जाएव पलित पुरत गात
नयन श्रवण विषाद या(आं?)ओत वचन नहि अवदात ॥
तखने तोहें जदि होएब परसनि देब संपति सार
विविध धन जन रतन हय गय निखिल होएत असार ॥
ब्रह्म वासव विष्णु शिव वसु केओ न लेषल आनि
भावे भरमल भवन ते जल धएल तुअ पद जानि ॥
एतय जे भेल जेहि तेहि गेल ओतहु मने अवधारि
जघन जमक जमाति जातव जतने हलव सभारि ॥
सुकवि प्रबल प्रताप मल्ल नृप वचन कर अवधान
मनक मनोरथ मनहि वाढल मनहि रहल निदान ॥४॥

॥ ९ ॥

पहडिआ रागे ॥ चोओ एक ताले ॥

हेरह हरषि दूष हरह भवानि
तुअ पद सरण करएल मने जानि ॥
मोय अति दीन हीन मति देषि
कर करूणा देवि सकल उपेषि ॥
कुतनय करय सहस अपराध

तैअओ जननि कर वेदन बाध ॥
परताप मल्ल कहए कर जोरि
आपद दूर कर करनाट किशोरि ॥५॥

॥ १० ॥

केदारा रागे ॥ धं ताले ॥

चरण कमल तुअ सेवल मय आइ
हमे कि कहव देवि तोहरि वडाइ ॥
प्रवल देव लहे वल भीम समाने
तेहु मन मने किछु धरब गुमाने ॥
विविध देव देह हे राग विलास
तैअऔ न तुअ पद होएब उदास ॥
घर घर भीषि मगाहोवह आनी
तैअओ न सरण तजब मने जानी ॥
सुरपति तह अति देवह विभूती
भजन भरम नहि करब जुगूती ॥
सुरगुरु सम जदि वरन अनूपे
देव हरि भाव नहि करव सरूपे ॥
जदि जडमति अछल विमुखे
करवह मने नहि मानव दूषे ॥
तोहे करुणामय मोय 'मति हीने
भगवति भाव समुचित नहि दीने ॥
परताप मल्ल कह सुनह जननी
सवे परिहरि कालि भजकाहु आनी ॥६॥

॥ ११ ॥

विहागरा रागे ॥ चोओ एकताले ॥

की नहि करएल जगत जग अनुचित चिते जनु राषह आनी
से सवे विसरि हरषि करुणामय अनुगत राष भवानी ॥
की नहि करएल भवानी ॥ ध्रु ॥
पतित शिरोमणि गुरुजन वंचक हमे कपटि अभिमानी ॥
तुअ पद भाव भगति नहि राषल केवल भएग अगेयानी ॥
त्रिभुवन विदित पाप जत संभव सवे हमे करएल सयानी ॥
पतित उधार निय परम वाल तुअ सफल करह मने जानी ॥
दिनपति वरुण बिरंचि सदाशिव सुरपति सारंगपानी
सकल देव गण मनहु न मानल किदहु बोलत जमवानी ॥
मल्लप्रताप विनति कर करजोरि तोहे त्रिभुवन पति रानी
जत अपराध करएल हमे सुन्दरि दूर कर निज सुत जानी ॥७॥

॥ १२ ॥

जय जवन्ति वेलावल रागे ॥ चोओ एकताले ॥

जखने करुण कटाष अवतरु कालि जे जन निमिष सव तरू
सकल सुख संपति आनद घरहि या (आ?) वए हे ॥
देषि तसु सुर सकल कंपित कालित निज परम शंकित
तेज सुरपति निषिल पौरूष धनद धनमद हे ॥
तरूण व (र) भानु तेज तरतिल प्रेतराज विषादे पूरित
चतुर चन्द्र विचारि तुअ पद शरण धनमद हे ॥
तेजि कमला कमल लोचन कठिनतर भव पाशमोचन
निमिष तसु वस भइय हरषित ए (?) सव षन हे ॥

जोग व्रत तपदान निर्म्मल यज्ञ जाप समस्त निष्फल
जाहि विमल कृपा विलोकन सरस संचर हे ॥
सुकवि मल्ल प्रताप संतत मेदिनी तल मौलि संगत
प्रणति कइए निवेद गोचर होह परसनि हें ॥ ८ ॥

॥ १३ ॥

धनाश्री रागे ॥ चोओ एकताले ॥

हे मानस ॥ ध्रु ॥

करह पूजन वित लाइ तेजि सकल कुटिलाई ॥
हृदय कमल परचारी वसय दिगम्बर नारी ॥
चाद वदन शिव वासे अछए अमिअ जल पासे ॥
धेआन धइए अनुकूले विषम विषय जन भुले ॥
मूल कमल सो भवानी गिरिश मिलावह आनी ॥
तोरि जगत रस फूले जीव दीप वहु मूले ॥
ए विविध लइए उयवाले(?) अथिर जिवन कर सारे ॥
कत कहव परकारे अपनहि मने अवधारे ॥
परताप नृप एहो भाने कइए परम अवधाने ॥ ६ ॥

शिलालेख संख्या — ५

॥ १४ ॥

मालश्री राजविजय ॥ चो ॥

जय मुण्ड मालिनि चण्डिके ॥ ध्रु ॥

प्रकट कट कट विकट वादिनि, झझम झम झम झंपिनी,

विवुध वृन्द विवोध दायिनी, तारिणी तनु धारिणी ॥
रक्त बीज समेध शोणित, चचट चट चट चार्व्विणी,
प्रणत लोक प्रमोद कारिनि, कालिका किलि दारिणी ॥
इन्द्र चन्द्र कुबेर जलपति, सकल सुरपति वन्दिते,
ब्रह्म विष्णु महेश शङ्करि, योगिनी गण पूजिते ॥
विनय नय मति विनति गोचर, जननि तुअ पद अंबिके,
नृप जितामित्र भाव भाषित, भारती पद चंडिके ॥

शिलालेख संख्या – ६

॥ १५ ॥

मालश्री ॥ ख ॥

परम ब्रह्म महेशि सुन्दरि, नील लोहित संगिके,
हरि विरञ्चि सरूप दायिनि, दुःख दुर्गति भंजिके ॥
जय चण्डिके ॥
गगम वायु मही विभावसु, आपतत्य सरूपिके,
एक पक्ष त्रिपक्ष वर्णग, पीठिका तट रापिके ॥
त्रिगुण त्रित्व त्रिधाम त्रिस्वर, त्रिमुख ··· ··· निवासिके,
क ···· ट ···· यशोनुगामिनि, लक्ष वर्ग्ग विगायिके ॥
अनुप रूप सरूप धारिणि, भुवन सृष्टिक पालिके,
हरण पालन जनन कारिनि, साधु नट पटु बालिके ॥
नृप जितामित्र भाव भाविते, भनयि निअ मति अम्बिके,
जे किछु देवि निदेश देखब, करब से सब चण्डिके ॥

शिलालेख संख्या—७

॥१६॥

मालश्री राजबिजय ॥ चो ॥

जय भूप पालिनि चण्डिके ॥ ध्रु ॥

डिडिम डिम डिम डमरु वादिनि - विकल कट कट हासिके—
ममट मट मट महिष मर्द्दिनि -- जगत रञ्जिनि कालिके ॥
चचक चक चक चरण नूपुर ॥ झझम झम झम झङ्किके—
धधक धक धक वसन वासिनि -- दुरित तारिणि तारिके ॥
समर धसि धसि दनुज दारिणि -- द्रिपि निवासिनि दुर्ग्गिके—
प्रणत पलिनि त्रिदश कालिनि - ब्रह्म विष्णु विमोहिके ॥
विनति गोचर जननि पुनु पुनु -- श्री जितामित्र भूपति—
कुमति दम्भ कुसंग तेजि कहु - होअओ तुअ पद मन्मति ॥

॥ १७ ॥

भैरव ॥ ज ॥ चो ॥

जय जय शङ्कर आदि नटेश्वर - सानन्द सहज सरुपे —
त्रिभुवन नाथ विकट नट नायक - भूषण फणि गण भूपे ॥
अमिय निरन्तर वमिय सुधाकर - ते जीउल मुडमाले —
कह कह हासे विहुसि हस सवेगण - चरण हेरल निज भाले ॥
ससरल शाप दहओ दिश धावल - गाओल विसरल गीते —
तखने वेआकुल परम सदाशिव - एकलि रहरि गोरि होते ॥

सहजे सवहि हित नृपतिजितामित्र - हर पद आन विभावे —
निय कुल पङ्कज तरुण दिवाकर - समुचित ई रस गावे ॥

॥ १८ ॥

॥ गौरी ॥ चो ॥

नमो मृदानी गिरि तनया -

सुर नर ईश सकल जन पूजित पाद सरोज सदय हृदया ॥ ध्रु ॥
देवि भवाणि सुराधिप माया त्रिभुवन पारिनि जलधि निलया
कण्ठ विराजित हाल फना मणि चौसठि पीठ महा विजया ॥
डिमि डिमि डिमि
डमरु करावत नृत्य तट्ट कुट कुट्ट कटक चारु चालिणि
थयि थयि थयिअ वाज मृदंगिनि धूमि धिमि धिमि मोद मोहिणि ॥
देवि महेशरि मोहि निहारह शंकर हृदय सयानी
मल्ल जितामित्र भूपति वाणी पुरह मनोरथ हमर भवाणी ॥

